अध्याय - विंश

आरोहण

(हरिगीतिका)

उपदेश देकर धर्म का जब, मौन कुरूवर हो गए ।
मुनि व्यास तत्क्षण घड़ी भर को, ध्यान में थे खो गए ।
कहने लगे फिर भीष्म से अब, धर्म को अनुमत करें ।
जाएं नगर में ये सबांधव, कार्य सब परिगत करें ॥1॥

बोले नदीसुत[1] तात जाओ, तुम सकेशव नागपुर[2] ।
दो सांत्वना सबको प्रजा का, शीघ्र होवे शांत उर ।
मिल विदुर से कर दो नियोजित, राजपुरूषों को त्वरित ।
सामात्य[3] अध्यवसाय कौशल से, करो कुरू उद्धरित ॥2॥

हों उत्तरायण सूर्य जब, तब लौट आना तात तुम ।
करना मनन उपदिष्ट का, गततंद्र[4] हो प्रतिप्रात तुम ।
करके नियोजित राजगण, सेवार्थ रक्षक युक्त वे ।
कर नमन कुरूवर व्यास को, धर्मज[5] नगर को थे चले ॥3॥

देखी व्यवस्था राज्य की, सब शांत पुरवासी किये ।
उपलब्ध नरपति थे सदा, सेवक बने सबके लिए ।
अति शीघ्र पंचाशत दिवस, बीते दिवाकर[6] भी फिरे ।
चल दिये तब कौन्तेय ले, धृतराष्ट्र को परिकर[7] घिरे ॥4॥

गांधारतनया[8] साथ थीं, ले हाथ चलती थीं पृथा ।
चल रहे पाण्डव सपावक[9], रोककर मन की व्यथा ।
युयुधान[10] और युयुत्सु[11] से, अनुगत चले यदुनाथ थे ।
सचिवों सहित क्षत्ता[12] चले, द्विज और ऋत्विज[13] साथ ले ॥5॥

(गीतिका)

शीघ्र ही वे सब सपरिचर[14], आ गए कुरू क्षेत्र में ।
देख कुरू वर की दषा थी, आर्द्रता हर नेत्र में ।
विषिख वपु को वेध भूतल, में वहां ऐसे गढ़े ।
वेधकर राजर्षि को ज्यों, हो रहे लज्जित बड़े ॥6॥

1. भीष्म	8. गांधारी
2. हस्तिनापुर	9. अग्नि सहित
3. सचिवों सहित	10. सात्यकि
4. आलस्य छोड़कर	11. धृतराष्ट्र का पुत्र
5. युधिष्ठिर	12. विदुर
6. सूर्य	13. वेदपाठी ब्राह्मण
7. राजसी संभार से घिरे	14. सेवकों सहित

(गीतिका)

रक्षिगण परिवृत्त देखा, वहां पर कुरूराज को ।
राज गण देखे उपस्थित, और ब्रहम समाज को ।
वहां नारद असित देवल, और व्यास महर्षि थे ।
नमन में उनके विनतसिर, नवल[1] कुरू राजर्षि[2] थे ॥7॥

नमन कर उनको पुकारा, तात युग मैं हूं आ गया ।
बांह पकड़ी भीष्म ने तब, नयन जल था छा गया ।
कहने लगे तब भीष्म मुझको यह, दिवस सुप्रतीक्ष्य था ।
उत्तरायण सूर्य का शुभ, धाम ही उद्वीक्ष्य[3] था ॥8॥

माघ का यह मास शुभ है, शुक्ल ही यह पक्ष है ।
अष्टमी तिथि आज फलता, काल का वट वृक्ष है ।
दिवस अट्ठावन बिताये, यंत्रणा सहते हुए ।
और बीती हैं निशाएं, आधि[4] में दहते हुए ॥9॥

वत्स बीते मास ये दो, हैं शताधिक वर्ष से ।
वेदना परिभूत[5] की बस, आत्मबल उत्कर्ष से ।
आज सबको देख मुझको, मिला बहु परितोष है ।
किसी के भी लिए अब मन, में नहीं कुछ रोष है ॥10॥

अंबिकासुत[6] शोक रिपु पर, शीघ्र तुम विजयी बनो ।
मानकर सुविधान विधि का, इसे आत्मजयी बनो ।
पाण्डु सुत ये तुम्हारे भी, बालवत हैं प्रेम से ।
इन्हें अपनाओ रखें ये, तुम्हें आदर क्षेम से ॥11॥

सत्यव्रत रहना सदा सब, पालना निज धर्म को ।
जितेन्द्रियता और तप हैं, सार जानो मर्म को ।
सब भरत वंशी सुनें मम, अंत्य[7] यह संदेश है ।
ले रहा तुमसे विदा कुरू, त्यागता अब देश है ॥12॥

1. नया	5. पराजित
2. युधिष्ठिर	6. धृतराष्ट्र
3. देखने योग्य	7. अन्तिम
4. मानसिक कथा	

(दोहा)

प्रीत हुए शषिधर[1] रहें, जन-जन के अनुकूल ।
हरें विषम भव[2] शूल को, लब्ध पुन: हो मूल ॥13॥

कहा युधिष्ठिर से पुन:, धरे रहो ऋत[3] मार्ग ।
इस भूतल पर सत्य ही, हे सुत रत्न महार्घ[4] ॥14॥

तुम धर्मिष्ठ वरिष्ठ हो, विस्मय विषय न तात ।
श्री का होता वास नित, अमलान्तर[5] जलजात[6] ॥15॥

अच्युत का तुमको रहे, करूणाविष्ट सहाय ।
जन जनपद पद प्रति करें, समता स्थित हो न्याय ॥16॥

सहजपंथधर को सदा, सहज रही उपलब्धि।
निर्गुण[7] अन्वेषण निरत, स्वयं रहो गुण अब्धि[8] ॥17॥

सत्य अर्थ में क्षितिप[9] बन, रहो क्षितिप चिर काल ।
गोद्विजजनसेवी करो, गर्वित भारत भाल ॥18॥

फिर बोले वे कृष्ण से, सबके आप शरण्य[10] ।
लें मुझको भी शरण में, जीवन विषम अरण्य ॥19॥

किया बहुत इस भीष्म ने, जीवन भर संग्राम ।
पाये अब तव कृपा से, यह शाश्वत विश्राम ॥20॥

समझाया था मूढ़ को, मैंने विविध प्रकार ।
हैं अवतरित उपेन्द्र[11] ही, धरकर नर आकार ।21

जहां कृष्ण हैं धर्म है, जहां धर्म जय नित्य ।
किंतु न माना सुयोधन, गया भोग अपकृत्य[12] ॥22॥

1. शिव जी	7. ब्रहम
2. संसार	8. समुद्र
3. सत्य	9. पृथ्वी पालक
4. अमूल्य	10. शरण योग्य
5. शुद्ध हृदय	11. विष्णु
6. कमल	12. दुष्कर्म

(सार)

कुरू का है शब्दार्थ करो मैं,
करता ही आया हूँ ।
फिर भी अंतिम कुरू होने का,
मैं अभाग्य लाया हूँ ।
हँसे कृष्ण बोले तुमतक ही,
थी कुरू अन्वय[1] धारा ।
भूलो कुरूता फिर वसुता को,
धरो तोड़ दो कारा ॥23॥

छोड़ो कल्पित नाम रूप मय,
जग प्रपंच यह सारा ।
मोहमकरदंष्ट्रा से हो दुरत,
जीव द्विरद[2] छुटकारा ।
परिवर्तन जलधार पंथ में,
खड़े रहो मत नग[3] से ।
जड़ता स्थिरता नहीं फेंक दो,
निगड[4] उतार स्वपग से ॥24॥

शरशय्या पर ही अंतिम क्षण,
सब प्राणी सोते हैं ।
भूतल का सब भौतिक अर्जन,
जब सकष्ट खोते हैं ।
सबको लगता छोड़ रहे जग,
असफल और पराजित ।
केवल आत्म वान[5] जाता है,
तुष्टमुदित श्रीराजित[6] ॥25॥

1. वंश, कुल	4. बेड़ी
2. हाथी	5. आत्म साक्षात्कार कर लेने वाला
3. पर्वत	6. महिमा युक्त

(सवैया)

मिलता परिणाम सदा शुभ ही
यदि जीवन भार तुम्हें हरि देता ।
नर के सम मैं तव आनन से
सब सार सनातन धर्मज लेता ॥
पर विक्रम का अतिमान मुझे
करता रहता अनयार्थ प्रणेता[1] ।
शर विद्ध शरीर प्रमाण यही
नर धर्म विरूद्ध बने न विजेता ॥26॥

गत प्राण पड़े रण में बहु वीर
प्रकंपित था जिन से जग सारा ।
बल विक्रम से शम लभ्य नहीं
यह ज्ञात हुआ जब जीवन हारा ॥
अपकर्म अनेक किए जग में
भवदीय कृपा बिन कौन सहारा ।
अब केशव मुक्त करो अति ही दुख ।
दायक है जग की यह कारा[2] ॥27॥

(दोहा)

बोले केशव देवव्रत, देवोपम गत शोक ।
होकर जाओ यशस्वी, हे वसु तुम वसु लोक ॥28॥

तुममें किल्विष[3] का नहीं, पाता हूं लव लेश ।
भूतल पर आदर्श हो, हे राजर्षि नरेश ॥29॥

1- जन्म देने वाला, निर्माण करने वाला
2- कारा गृह
3- पाप

(दोहा)

नरक1 विजय है आपकी, लघुकृति ही देवेश[2] ।
दासों को भी नरक जित, करते यही विशेष ॥30॥

आकृति कृति वाणी हरे, करती मधु उपहास ।
मधु रिपुता[3] पर जगत में, कौन करे विश्वास ॥31॥

(सवैया)

तब शीघ्र निमीलित लोचन हो
प्रणमांजलि में कर वद्ध हुए हैं ।
जपते मन में प्रणवादि सुमंत्र
समग्र समीर[4] निरूद्ध हुए हैं ॥
गत हैं मन के दुरत संशयवृन्द
मुरारि प्रबोध प्रबुद्ध हुए हैं ॥
अब भीष्म नहीं कुरू वृद्ध नहीं
वसु थे वसुमान[5] विशुद्ध हुए हैं ॥32॥

यह छोड़ असार धरा गमनोत्सुक
अंतिम जो कुरूवीर हुए हैं ॥
गिरता चिरकाल खड़ा वटवृक्ष
प्रयाण प्रवृत्त समीर हुए हैं ।
कर जोड़ खड़े सब पाण्डव आज
पितामह त्याग शरीर रहे हैं ।
अब धीरज कौन बंधा सकता
सबके उर को दुख चीर रहे हैं ॥33॥

1- नरक, नरकासुर जिसे श्री कृष्ण ने मारा था
2- देवताओं के भी स्वामी श्री कृष्ण
3- मधु नामक दैत्य के शत्रु श्री कृष्ण
4- प्राण वायु
5- कान्तिमान

(रोला)

मम आज्ञा जोहतीं, अभी तक दूर खड़ी थी ।
अट्ठावन दिन रात, कुसंशय मध्य पड़ीं थी ।
अब अनुमति है चलो, साथ में तुम भी मेरे ।
टूटें पीड़ा पूर्ण, तुच्छ पार्थिवता घेरे ॥34॥

यहां चिरन्तन द्वंद्व, भिन्न कुछ भी न जगत में ।
सुखाभास छलपूर्ण, लालसानलपरिगत में ।
करके भी पुरूषार्थ, न सार्थक आता कर में ।
पर आता यह बोध, न प्राय: जीवन भर में ॥35॥

तुम शांतिस्वरूप, शुभागम आज तुम्हारा ।
धारित सुभग धुरवत्व[1], अधुरवतायुत भव[2] सारा ।
होता क्षिप्त असार, भीति इसमें क्यों होगी ।
कंपित होता देख, तुम्हें केवल भव रोगी ॥36॥

दीप्तारूण लोचना, शुभ्रदशना घनश्यामा ।
परम अवार्य अमोघ, असितकच[3] देह अक्षामा[4] ।
देतीं चिर विश्रान्ति, अतुल आयत[5] ज्यों यामा[6] ।
सर्वभूत समदृष्टि अश्रान्ता[7] नित्य अकामा[8] ॥37॥

अम्बावत न सरोश यदि्प लोहित[9] लोचन हो ।
अप्रतीक्षित आहूति[10], आगता दुख मोचन हो ।
दुहिता वत काशिजा[11], बनो तुम भी मम पुत्री ।
रहा बड़ा परिवार भीष्म है यदि्प निपुत्री ॥38॥

1. निश्चिंतता	6. रात्रि
2. सांसारिक प्राणी	7.बिना थकी हुई
3. काले केश	8. कामना शून्य
4. पुष्ट देह	9. लाल
5. दीर्घ	10. बुलावा, आमंत्रण
	11. काशिराज पुत्री अम्बा

चलूं पुन: वसुधाम त्याग रक्तिम वसुधा को ।
चखे वारूणी[1] कौन छोड़ उपलब्ध सुधा को ।
मिथ्या है बल गर्व सकल यह खेल नियति का ।
भोगी गति चिरकाल समय आया अब यति[2] का ॥39॥

तज अर्कज[3] दिग्भानु बढ़े कौबेर[4] दिशा में ।
मैं भी अब क्यों रहूं सुप्त भव घोर निशा में ।
देवयान[5] अब खुला देवव्रत के स्वागत में ।
तजकर तिमिरातीत चला भास्वर[6] आगत[7] में ॥40॥

(मालिनी)

प्रयतचरितधारी मृत्युआधीनकारी ।
रणहरिवत वीरों के सदादर्श जो थे ।
गुरू अनुशयकर्ता[8] वंशउत्कर्षकामी ।
दिनकृत[9] वत आभाधार[10] देखो चले हैं ॥41॥

(रोला)

श्रुति कटु भेरी घोष अस्त्र रव फिर आक्रन्दन ।
छूटा पीछे दूर, कि ज्यों दु:स्वप्न विखण्डन ।
क्रान्ततमिस्त्रसुरंग[11] लब्ध वह दिव्य लोक था ।
शीतल आभा युक्त तृप्तिदायक अशोक था ॥42॥

स्वैर गमन[12] निर्भार अनामयता[13] को पाकर ।
क्षुधा तृषादि विमुक्त प्रसादित मानस पाकर ।
वसु थे अब कृतकार्य भवार्णव[14] भी अतीत था ।
अब तक आभा छिपी आज वपु द्युतिपरीत[15] था ॥43॥

1. मद्य
2. विराम, विश्राम
3. यमराज
4. कुबेर के आधिपत्य की दिशा अर्थात उत्तर दिशा
5. जीवात्मा के महाप्रयाण के दो मार्ग हैं देवयान तथा पितृयान
6. देदीप्यमान
7. भविष्य
8. गहन दुख करने वाले गुरू को दुख पहुंचाने वाले
9. सूर्य
10. आभा धारण करने वाला या आभा के आधार
11. अंधेरी सुरंग पार कर
12. स्वच्छन्द गमन
13. नीरोगता
14. संसार सागर
15. दीप्ति के घिरा हुआ

(सवैया)

देख हुआ परिताप महा यह
दृश्य गिरे नर[1] मूर्छित होके ।
भीम असीमित धैर्य विसार
सक्रन्द[2] गहे पग अश्रु भिगो के ॥
भाव प्रवाह बहे अति कातर
धर्मज भी कुरू याद संजो के ॥
नेत्र निमीलित थे हरि के
सब कर्म प्रभाव वहीं पर रोके ॥44॥

अब शौर्य नहीं शुभ रूप बचा
इस भूतल से गत है सुप्रतिज्ञा ।
ऋत का उपदेश करे अब कौन
अतीत हुई नय मर्म अभिज्ञा[3] ॥
तप त्याग निदर्श गए जग से
कृप की अवरूद्ध हुई सब प्रज्ञा ।
जगती यह धन्य हुई तुमसे
चिरकाल रहे भवदीय समज्ञा[4] ॥45॥

(भुजंग प्रयात)

पिता के सुखों के लिए सर्वत्यागी ।
महावीर नीतिज्ञ विद्यानुरागी ।
बड़े कष्ट सत्यार्थ झेले व्रती ने ।
नहीं हार मानी कभी भी कृती ने ॥46॥

हुई धारिणी[5] शौर्य से आज सूनी ।
व्यथा जाह्नवी की हुई तात दूनी ।
महामान्य क्षोणीभृतों के रहे हैं ।
कहा कृष्ण ने राजयोगी गए हैं ॥47॥

1- अर्जुन
2- क्रन्दन करते हुए
3- पहचान, ज्ञान
4- यश, कीर्ति
5- पृथ्वी

वृती राम के शिष्य खो के सवित्री[1] ।
हुई बाण विद्या विहीना धरित्री ।
दुरालोक[2] आलोक भू से उठा है ।
हुआ धन्य द्यौ[3] भाग्य भू का लुटा है ॥48॥

(सरसी)

द्यौ[4] का है आवास मात्र द्यौ, जाओ भूतल त्याग ।
छोड़ो यही अनय नय स्मृति भी, विस्मृति राग विराग ।
निशा दिवस हिम ताप धरणि पर, द्वन्द्वों का ही राज्य ।
इनसे परे रहो आनन्दित, हे आत्मा अविभाज्य ॥49॥

जाओ स्वर्गंगा[5] अवगाहन, अब करना तुम धीर ।
दिव्य देह धर हुए त्यागकर, नरशरशीर्णशरीर[6] ॥50॥

प्रतिश्रुति[7] के प्रतिमान[8] वचन के, हे अनुपम आदर्श ।
रणविद्याप्रतिमूर्ति शौर्य के, विस्मयप्रद उत्कर्ष ।
धर्मप्राणनीतिज्ञ त्याग तप, के भायुक्त[9] प्रहर्ष ।
जाओ वसु निजधाम नमन शत, करता भारत वर्ष ॥51॥

सातों अग्रज मिले, कहा बहु दुख पाया है ।
पाद न्यून द्विशताब्द[10], बाद यह घर आया है ।
बोले पर यह शौर्य, त्याग ऋत के पालन का ।
रख आया आदर्श, आर्य जन परिपालन का ॥52॥

हमसे अधिक सहिष्णु, अत: यह प्रिय माता को ।
हम हैं पाकर धन्य, धर्म ध्वज धर भ्राता को ।
तुम सच्चे कामारि[11], भक्त हम तो हैं भोगी ।
तुम हर बाधा हार, रहे हम मृदु प्रतिरोधी ॥53॥

1. पृथ्वी	7. प्रतिज्ञा
2. जिसे देखना भी कठिन हो	8. मानक आदर्श
3. आकाश लोक	9. प्रभा युक्त
4. द्यौ नामक वसु जो भीष्म थे	10. 175 वर्ष
5. स्वर्ग में स्थित गंगा की धारा	11. काम के शत्रु कामजयी
6. अर्जुन के बाणों से छिन्न देह वाले	

(सार)

हम बस आत्म मुग्ध वसुता से
तुम शिक्षक नरता के ।
तुम थे सेतु अमरता के इस
निंदित मृण्मयता के ॥
दशावतार समान हरा बहु
भार मात्र दस दिन में
क्षत्रिय का है धर्म धनुष में
नहीं हविष्य[1] अजिन[2] में ॥54॥

(रोला)

व्यथितान्तर भू[3] देव, और नरदेव[4] सभी थे ।
आरोहित निज धाम, देवव्रत अभी-अभी थे ।
ज्ञापक दुंदुभिघोष, देवगण के प्रहर्ष का ।
देवदेव[5] अविकार, काल सरिता[6] अमर्ष[7] का ॥55॥

(दोहा)

प्रस्थित थे वसुधाम[8] को, वसुधा तज वसुधाम[9] ।
हुए विपुल वसुमान[10] भी, पाण्डव दृग वसुमान[11] ॥56॥

शान्त हुए थे शान्तनव[12], परिजन सभी अशान्त ।
शीतल छाया वट सदृश, उनकी थी अतिकान्त ॥57॥

सुरसरिवत[13] ही सुरसरिज[14], परहित निरत सदैव ।
अनघ[15] अदुष्य[16] अवार्यगति[17], गये अहा दुर्दैव ॥58॥

तव की चिता आचित[18] सपाण्डव, विदुर और युयुत्सु ने ।
क्षौमान्शु[19] वेष्टित माल्य भूषित, किया कार्य विधित्सु[20] ने ।
सित[21] चंवर सितहय[22] व्यजन पवनज, नमित हो करने लगे ।
उष्णीष[24] लेकर यमज[25] थे गुरू, शोक में ही ज्यों पगे ॥59॥

1. यज्ञ हवन सामग्री	9. दीप्त तेज वाले	17. जिसकी गति रोकी न जा सके
2. मृग चर्म (काला मृग चर्म)	10. प्रभूत धन वाले	18. संचित (चिता) चुनना
3. ब्राह्मण	11. जल युक्त	19. रेशमी वस्त्र
4. राजा	12. शान्तनु पुत्र भीष्म	20. कार्य संपादन की इच्छा वाला
5. श्री कृष्ण	13. गंगा	21. श्वेत
6. गंगा	14. गंगापुत्र भीष्म	22. अर्जुन
7. क्रोध	15. निष्पाप	23. भीम
8. वसु नामक देवताओं का निवास	16. जिसे दूषित न किया जा सके	24. पगड़ी, मुकुट 25. जुड़वां भाई नकुल व सहदेव

(हरिगीतिका)

फिर पितृ मेध विधान विधिवत, वहां धर्मज ने किया ।
पटु साम गायन मध्य याजन, दीप्त पावक को किया ।
धृतराष्ट्र ने वदनाग्नि[1] दी थी, प्रज्ज्वलित चंदन चिता ।
पंचत्व[2] में कुछ ही समय में, खो गये पावन पिता ॥60॥

(दोहा)

वसु[3] तनु धरकर अतनु वसु[4], मानो अर्पित कव्य[5] ।
पावक[6] रहा न आज था, हव्यवाह[7] वह भव्य ॥61॥

आजीवन त्रेताग्नि[8] को, करके नित संतुष्ट ।
निज को ही अर्पित किया, अपगासुत[9] क्या रूष्ट ॥62॥

वसुधे[10] वसुधा नाम की, अब तुम बचीं सुदीन ।
गत है वसु[11] इस लोक से, नरता भी श्रीहीन[12] ॥63॥

(हरिगीतिका)

कर नमन सादर खिन्न मन से, जाह्नवी[13] तट पर गए ।
दुख वेग सहते सकल पाण्डव, अंबिकासुत[14] नित नए ।
माधव असित देवल पराशर, सूनु नारद साथ थे ।
कुरूश्रेष्ठ को देने जलांजलि, उठे सादर हाथ थे ॥64॥

(दोहा)

देखो शान्तनु आज है, तनय तुम्हारा शान्त ।
दारक[15] दारित[16] आज उर, पीड़ा निशा निशान्त[17] ॥65॥

खण्ड परशु[18] भी कर सके, जिसको नहीं परास्त ।
तुच्छ शिखण्डी ने किया, कैसे शौर्य निरस्त ॥66॥

देखी विह्वल जाह्नवी, हरि ने किया प्रबुद्ध ।
देवी मोचित शाप वसु, गतनिजगृह अनिरूद्ध ॥67॥

1. मुखाग्नि
2. पंचतत्व में (पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश, वायु)
3. भीष्म
4. अग्नि
5. हवन सामग्री
6. पवित्र करने वाला, अग्नि
7. हवन सामग्री को वहन करने वाला, देवताओं तक पहुंचाने वाला
8. गार्हपत्य, दक्षिण तथा आहवनीय तीन अग्नियां
9. भीष्म
10. धनों को धारण करने वाली, पृथ्वी
11. भीष्म
12. शोभाहीन
13. गंगा
14. धृतराष्ट्र
15. पुत्र
16. फाड़ा हुआ विदीर्ण
17. घर
18. परशुराम